International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457
Volume-3, Issue-3 June- 2016
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

नरेश मेहता और दूसरा सप्तक के कवियों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. लोकेश कुमार शर्मा

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)

राजकीय महाविद्यालय टोंक (राज.)

सार

नरेश मेहता के प्रदीर्घ साहित्य संसार की अंतर्वस्तु गहरी संवेदनाओ से निर्मित है द्य अपने साहित्य की अंतर्वस्तु से लेकर भाषा तक हर स्तर पर वे अपने समय के सामाजिक परिवेश तथा भारतीय परम्पराओ से संपृक्त है द्य नरेश मेहता के साहित्य सृजन का युग प्रयोगवाद तथा नई कविता से लेकर नवे दशक तक फैला हुआ है द्य उनकी आरम्भिक पहचान दूसरा सप्तक के कवि के रूप में बनी द्य नरेश मेहता ऐसे साहित्यकार रहे हैं जिन्होंने प्रत्येक विचारधारा व अवधारणा में जो कुछ भी सर्वोत्तम है उसे लिया है साथ ही उन्होंने वायवीयता के बजाय ठोस धरातल पर अपनी भावभूमि को प्रतिष्ठित किया है। परम्परा और आधुनिकता का द्वंद्व नरेश मेहता के समस्त रचना संसार में दिखाई पड़ता है द्य इस द्वंद्व के कारण ही उनके काव्य में आदिम राग चेतना में आधुनिक जीवन संदर्भों के निशान दिखाई देते हैं।

कुंजीशब्द : *नरेश मेहता , दूसरा सप्तक कवियों , अध्ययन*

प्रस्तावना

साहित्यशास्त्र में उपन्यास और कहानी के छः तत्व माने गये हैं। किसी उपन्यास की समीक्षा करते समय या उसके विषय में बातें करते समय इनका विवेचन काम में आता है, ये तत्व कथानक, पात्र, संवाद, देशकाल, भाषा और शैली तथा उद्देश्य हैं। कथानक उस सामग्री का नाम है जिसे लेखक जीवन से चुनता है, जिसे पात्र, क्रिया व्यापार और घटनाओं के संबंध में निरूपित किया जाता है। पात्र या चरित्र वे व्यक्ति हैं, जिनके द्वारा घटनाएँ घटती हैं। उपन्यास जगत में पात्रों के मध्य बातचीत को कथोपकथन या संवाद कहते हैं। देशकाल से अभिप्राय उस काल और स्थान विशेष से रहता है, जिसका आधार उपन्यास का कथानक अथवा वस्तुविन्यास ग्रहण करता है। भाषा और शैली उपन्यासकार की अभिव्यंजना पद्धति होते हैं तथा रचनाएँ किसी–न किसी उद्देश्य की पूर्ति अवश्य करती हैं।"

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी के यशस्वी कवि श्री नरेश मेहता उन शीर्षस्थ लेखकों में हैं जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं। नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नयी व्यंजना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्त्व है, जो उन्हें प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं। आर्ष परम्परा और साहित्य को श्रीनरेश मेहता के काव्य में नयी दृष्टि मिली। साथ ही, प्रचलित साहित्यिक रुझानों से एक तरह की दूरी ने उनकी काव्य–शैली और संरचना को विशिष्टता दी।

जन्म एवं परिवार

साहित्य के सजग शिल्पी तथा साहित्य को अन्वेषण की प्रक्रिया मानने वाले आधुनिक भारतीय साहित्य के शीर्षस्थ साहित्यकार एवं आधुनिक हिन्दी को कवि, कथाकार, गीतकार, नाटककार, पत्रकार तथा चिंतक के रूप में अपना प्रदेय सौंपने वाले श्री नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी, 1922 ई. में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में एक निम्न मध्यमवर्गीय वैष्णव परिवार में हुआ। नरेश जी का पारिवारिक नाम पूर्णाशंकर था, जो बाद में नरसिंहगढ़ की राजमाता के द्वारा दिये गये नाम नरेश के कारण नरेश मेहता हो गया।

नरेश मेहता के पितामह पं. मोतीराम एक पुरुषार्थी व्यक्तित्व के धनी थे। इनके तीन पुत्र पं. बिहारीलाल, पं. शंकरलाल और पं. रामनारायण और एक पुत्री थी। नरेश मेहता के पिता पं. बिहारीलाल को संतान के लिए तीन बार विवाह करने पड़े थे।

पहली पत्नी निःसंतान ही मर गई दूसरी पत्नी से एक कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम शांति था और तीसरे विवाह से पुत्र नरेश जी का जन्म हुआ। बालक नरेश के जन्म के डेढ़ वर्ष पश्चात् ही उनकी माता जिनका नाम सुन्दर बाई था का स्वर्गवास हो गया था।

तीन–तीन पत्नियों को खोकर पुत्र की प्रप्ति से पिता में एक अजीब संकुल भाव होना स्वाभाविक ही था। बड़े काका पं. श्री शंकरलाल जी धार राज्य में हेडमास्टर थेय बाद में डिप्टी कलेक्टर हो गये थे। उन्होंने ही बालक नरेश को अपने पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया और 3–4 वर्ष की उम्र में ही नरेश जी अपने चाचा के पास चले गये थे।

नरेश जी के पिता एक साधारण नौकरी में थे, वे रजिस्ट्रार थे और नीरसतापूर्ण जीवन जी रहे थे, वहीं पुत्र के प्रति दायित्व–विहीन भी होते चले गये। चाचा पं. शंकरलाल जी के पास अत्यधिक सम्पन्नता थी, हर सुख– साधन, भौतिक भोग विलास सब कुछ था, नहीं थी तो पारिवारिक उष्मा। इसी

अपनत्व की ऊष्मा के अभाव ने नरेश जी को काफी हद तक निष्ठुर बना दिया था। परिवार के नाम पर नरेश जी के हिस्से केवल अभाव ही आया। मातृत्व तथा पिता का वात्सल्य दोनों ही भावनाओं से नरेश जी अनभिज्ञ रहे। जिनसे उन्हें अपनत्व मिला वह था, दादा की बहन का परिवार। "परिवार व्यक्ति को समझदार बनाता है, यही समय जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रारंभिक काल भी है। परिवारहीनता की स्थिति में यह स्वाभाविक था कि नरेश जी प्रेरणा के स्रोत बाहर अन्य–परिवारों में ढूंढ़ते। जिस परिवार से उन्हें यह प्रेरणा प्राप्त हुई, उनके प्रति वे जीवन भर कृतज्ञ रहे। शाजापुर का भट्ट परिवार भी ऐसा ही परिवार था, पितामह की बहन का परिवार। घर से बिल्कुल लगा हुआ, जहाँ दादा (श्री नंद किशोर भट्ट) और भाभी से उन्हें बेहद आत्मीयता थी।"1

नरेश मेहता का विवाह इलाहाबाद के रहने वाले पं. श्री सत्यनारायण व्यास जी की बेटी महिमा, जो बहुत ही साधारण एवं संस्कारी परिवार से थी, के साथ हुआ। विवाह से पूर्व लखनऊ के कालखण्ड में नरेश जी का प्रेम प्रसंग चल रहा था। प्रेम विवाह की मंजिल तक न पहुँच सका और किसी गलतफहमी का शिकार होकर उस महिला ने आत्महत्या कर ली। जिसके आघात से नरेश जी आपादमस्तक हिल गये थे। महिमा जी विवाह के पूर्व कानपुर में स्नातक कक्षाओं में समाजशास्त्र की प्राध्यापिका थींय परन्तु विवाह के बाद उन्होंने अपने प्राध्यापक पद से त्यागपत्र दे दिया और प्रेरणामयी पत्नी बनकर संघर्ष के हर क्षणों में नरेश जी का साथ दिया, उनमें आत्मविश्वास जगाया।

महिमा मेहता जी ने एक पुत्र बाबुल (ईशान) और 5 वर्ष बाद दूसरी संतान कन्या बुलबुल (वान्या) को जन्म दिया। दोनों ही बच्चे पढ़ाई में सदैव प्रथम स्थान ही प्राप्त करते थे। परिवार पर नरेश जी के व्यक्तित्व की छांव थी। वान्या का विवाह मुम्बई में निवासरत् बोरा परिवार के लड़के सुधीर बोरा परिवार में सम्पन्न हुआ और बाबुल का विवाह भी एक अच्छे संस्कारी परिवार की कन्या वन्दना से हुआ।

नरेश जी ने जीवन–संघर्ष के कई तपते कड़े कोस तय किये और अन्ततः उन्हें राहत भी मिली, परन्तु अचानक परिवार में एक दुखद घटना घटी और नरेश जी को मौन कर गयी, वह घटना थी, बेटे बाबुल के न रहने की। 13 जून 1988 में विवाह के मात्र डेढ़ महीने बाद बाबुल की एक कार दुर्घटना से असामयिक मृत्यु हो गयी और प्रशान्त तेजोमय व्यक्तित्व वाली नरेश जी की पुत्र–वधु वन्दना विधवा हो गयी।

नरेश जी को नर्मदा नदी से बेहद लगाव था वह उसे मातृरूप में ही देखा करते थे। पारिवारिकता या अपनत्व की ऊष्मा के स्पर्श से वंचित मातृहीन के लिए मातृवत थी नर्मदा। नर्मदा से ही उन्होंने आगे बढ़ना एवं जीवन–पर्यन्त चलते रहना सीखा। 22 नवम्बर सन् 2000 को नरेश जी ने अपने जीवन की इहलीला समाप्त की।

अध्ययन के उद्देश्य

1. नरेश मेहता और दूसरा सप्तक के कवियों का तुलनात्मक अध्ययन
2. नरेश मेहता बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व व कृतित्व का अध्ययन

शिक्षा—दीक्षा

नरेश जी की छठीं तक की पढ़ाई चाचा के यहाँ 'धार' में हुई। वे अपने चाचा के साथ केवल छठीं कक्षा तक रह सके, क्योंकि बाद की पढ़ाई उस कस्बे में नहीं होती थी। फिर वे आगे की पढ़ाई के लिए अपनी बुआ के यहाँ नरसिंहगढ़ भेज दिये गये। वहीं रहकर उन्होंने आगे की कक्षाएँ उत्तीर्ण की। पालन—पोषण का सारा खर्च चाचाजी ही वहन करते थे।

नरेश जी के आस्थावान पिता ने उन्हें आगे पढ़ाई के लिए नरसिंहगढ़ से उज्जैन भेज दिया। जहाँ उनके चचेरे भाई श्री नंदकिशोर भट्ट रहा करते थे, उन्हीं के साथ रहकर नरेश जी ने हाईस्कूल की परीक्षा पास की। तथा वहीं रहकर इण्टरमीडिएट की परीक्षा भी तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। आगे की पढ़ाई के लिए नरेश जी ने काशी को चुना जहाँ उन्होंने बी.ए. की तथा एम.ए. हिन्दी साहित्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद बनारस जाकर वहाँ रहकर हिन्दी साहित्य में शोधकार्य भी प्रारंभ किया, जो कुछ कारणों से अधूरा ही रह गया था। उसके बाद बनारस के 'आज' अखबार में कुछ दिन काम किया, पर वह भी रास नहीं आया और उन्होंने बनारस को अलविदा कह दिया।

नरेश जी के जीवन का आरंभ एक प्रकार से सन् 1948 में लखनऊ के ऑल इंडिया रेडियो में कार्य की शुरुआत से हुआ। वे सन् 1948 से 1953 तक रेडियो कार्यक्रम अधिकारी के पद पर कार्यरत् रहे। सन् 1954 से 1959 तक मुख्य रूप से दिल्ली में अपने चचेरे भाई नंद किशोर भट्ट के साथ रहे और कुछ छोटे—मोटे काम भी किये, पर सफल नहीं रहे फिर दिल्ली छोड़कर नरेश जी इलाहाबाद चले गये और इलाहाबाद को ही उन्होंने अपना अध्ययन केन्द्र बनाकर अपनी सृजनात्मक क्षमता पर बल देते हुए अपने जीवन को सृजनात्मक धरातल पर उतारा और फिर हिन्दी साहित्य जगत् के लिए निर्मित हुआ एक कवि, कथाकार, गीतकार, नाटककार, कहानीकार और पत्रकार।

बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व

खुशमिजाजी—औत्सविक मानसिकता वाले श्री नरेश जी का व्यक्तित्व बहुत ही गहरा एवं आकर्षक था। नरेश जी के जीवन के ऐसे कई मोड़ हैं जिनसे उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ और प्रभावशाली भी बना।

नरेश जी श्याम वर्ण के थे, आँखें अपेक्षाकृत छोटी, तेज, निश्छल और चमकीली थीं जो सामने वाले को सम्मोहित करती थीं। बचपन में ही मातृहीन होने पर उनका शरीर रोगी था, परन्तु उनके पैर हिरण की तरह मजबूत थे, वे सभी प्रकार के खेल—खेलने में निपुण थे। नरेश जी बहुत ही करीने से कपड़े पहनते थे। बहुत ही अच्छी तरह से अपने केश संवारते थे, अच्छा और थोड़ा भोजन करते थे। वे खाने—पीने के बहुत शौकीन थे। ट्रेन में सदैव वातानुकूलित या प्रथम श्रेणी में ही चलते थे। नरेश जी चाय तो पीते ही थे, सिगरेट और पान का भी शौक था। नरेश जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनको संगीत, खासकर शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य में अत्याधिक रुचि थी। नरेश जी के स्वभाव में एक अजीब—सा विरोधाभाव था। वे ऊँच—नीच और जातिगत भेदों से बहुत परे थे।

प्रारंभ में नरेश जी बहुत ही क्रोधी स्वभाव के थे, परन्तु विवेक ने उन्हें सदा संतुलित रखा। नरेश जी का जीवन प्रारंभ में चाचा के संरक्षण में सुख—सुविधाओं के बीच बीता, परन्तु चाचा से कभी अपनापन और प्रेम नहीं मिला। ना ही पढ़ने—लिखने में उनकी रुचि उत्पन्न हुई। चाचा के कठोर अनुशासन ने उन्हें काफी हद तक विद्रोहवादी भी बना दिया था, जिससे उनका व्यक्तित्व अन्तर्मुखी होकर कडुवाहट से भर गया था। "प्रारंभ के दिन सुख और सुविधाओं से भरे थे, किन्तु समय बीतने के साथ—साथ पहले सुविधाएँ तिरोहित होने लगी और फिर सुख भी बीत गया। परिवार के नाम पर

उनके हिस्से अभाव ही आया। फलस्वरूप प्रारंभ से ही व्यक्तित्व अन्तर्मुखी हो गया। उस अन्तर्मुखी किशोर को न परिवार का गणित समझ आया और न ही स्कूल का। दोनों ही गणित से उन्हें घृणा हो गई जिसने उनके व्यक्तित्व में कड़ुवाहट भर दी और वह कड़वाहट नरेश जी के जीवन का अंग बन गयी।"2

चाचा के संरक्षण में नरेश जी के भीतर एक खर्चीला सामन्ती स्वभाव भी निर्मित हो चुका था, वे शाहखर्ची बन गये थेय क्योंकि चाचा के साथ, उनके वैभव सम्पन्न वातावरण ने उन्हें उस प्रवृत्ति का बना दिया था। स्वाभिमान उनमें कूटकूटकर भरा हुआ था, परन्तु वे अभिमानी बिल्कुल नहीं थे। नरेश जी के व्यक्तित्व में गहरी कल्पनाशीलता भी थी। वे कहते थे – "मैंने कभी समकालीनता की चिन्ता नहीं की तो समकालीनता मेरी चिन्ता क्यों करे। वे कहते थे, मैं जिद्दी हूँ लेकिन मेरी जिद्द वैसी है जैसी पत्थर को तरासने वाले पानी की जिद्द होती है।"

नरेश मेहता के पिता पं. बिहारी लाल तथा काका शंकर लाल जी अपने विचार, जीवन शैली और व्यक्तित्वों के दो विपरित ध्रुव थे ये दोनों ही प्रभाव नरेश मेहता पर पड़े। दबंग, वैभव–सम्पन्न, सुसंस्कृत, बहुज्ञ, कविता–कला के प्रति गहरी रुचि रखने वाले चाचा तथा असंग तटस्थ भाव वाले अपने पिता इन दोनों व्यक्तियों का प्रभाव नरेश जी पर रहा। नरेश जी दृढ़संकल्पी तथा बोलने में निर्भीक थे। निर्भयता के अतिरिक्त नरेश जी के चरित्र की एक विशेषता थी उनका संयम, विवेक, धैर्य और प्रतीक्षा। संयम और विवेक उनके लेखन में भी देखा जा सकता है और उनके जीवन में भी। धैर्य और प्रतीक्षा का उदाहरण है उनकी किसी भी रचना पर टी.वी. धारावाहिक का न बनना।

नरेश जी स्वभाव से शालीन एवं निश्छल थे। पाण्डित्यपूर्ण वातावरण पारिवारिक देन स्परूप नरेश जी को बचपन से ही प्राप्त हुआ, उसे गरिमापूर्ण बनाया काशी के मनीषात्मक परिवेश ने और नरेश जी का मानसिक संस्कार उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित हो गया। काशी में नरेश जी पर गुरु श्री केशव प्रसाद मिश्र जी का गहरा प्रभाव पड़ा।

मित्र, नरेश जी की बहुत बड़ी कमजोरी थे। उनके मित्रों की सूची बहुत लम्बी है। शमशेर जी, अशोक वाजपेयी, महेन्द्र भल्ला, श्रीकांत वर्मा, कृष्णा सोबती, कैलाश चन्द्र माथुर, निर्मल वर्मा, राजकुमार, नेमीचन्द्र, सुरेश अवस्थी, कैलाशचन्द्र पन्त, डॉ. सत्यप्रकाश, सरोजकुमार शान्ति मेहरोत्रा, आनंद मोहन, नीरव जी, गजानन माधव मुक्तिबोध, मीरा श्रीवास्तव, अज्ञेय, रामकमल, प्रभात, प्रमोद, पवन, सुरेन्द्र व्यास, गिरिराज किशोर, रमेश ग्रोवर, कनक तिवारी और भी कई मित्र थे जिन्होंने नरेश जी से आत्मीयता रखी, किसी ने विद्यार्थी जीवन को संभाला तो किसी ने सर्जक जीवन को। समय–समय पर इन मित्रों ने संघर्ष के क्षणों में भी इनका सहयोग कर इनके अन्दर के लेखक और कवि को हताश होने नहीं दिया।

नरेश जी को शास्त्रीय, धर्म, दर्शन, इतिहास, ज्योतिष, तन्त्र पढ़ने में भी अधिक रुचि थी, परन्तु जासूसी कहानियाँ पढ़ना भी उन्हें अच्छा लगता था। नरेश जी को उर्दू का अच्छा ज्ञान था और वे गलत उच्चारण पसंद नहीं करते थे, उनका मानना था कि गलत उच्चारण भाषा का अपमान है।

नरेश जी स्वतन्त्र विचार वाले व्यक्ति थे, रेडियो कार्यक्रम अधिकारी पद से त्यागपत्र देना उनके स्वतन्त्र स्वाभिमान एवं स्वतन्त्र विचार का द्योतक है। नरेश जी पूरी तरह आस्तिक थे। वे पारम्पारिक ढंग से पूजा–पाठ नहीं करते थे बस सुबह नहाधोकर गायत्री मंत्र का जाप और सोने से पहले ध्यान उनका नित्य नियम था। वे साल में तीन बार व्रत रखते थे – जन्माष्टमी, दुर्गा अष्टमी और महाशिवरात्रि।

नरेश जी सारे त्यौहार, पर्व बड़े ही उत्साह से मनाते थे। नरेश जी औत्सविक मानसिकता वाले व्यक्ति थे। वे उत्सव मनाने का अवसर ढूंढा करते थे। घर पर किसी मित्र या अतिथि का आगमन उनके लिए उत्सव हो जाता था। नरेश जी के व्यक्तित्व में उस परमसत्ता की अनुभूति का जो तत्व है उसको जाने बिना उनके व्यक्तित्व को पूर्णता से नहीं समझा जा सकता। नरेश जी का आध्यात्मिक पक्ष बहुत ही गहरा है।

नरेश जी के व्यक्तित्व की छाप अमिट है उनका पार्थिव शरीर नहीं है पर उनका अमर व्यक्तित्व सदा रहेगा। उनके व्यक्तित्व का दीप साहित्य जगत् को आलोकित करता रहेगा – अनागत कालों तक।

कृतित्व

आधुनिक भारतीय साहित्य के शीर्षस्थ कवि, कथाकार एवं विचारक नरेश मेहता अपनी सृजनात्मकता एवं पहली तुकबंदी का श्रेय अपनी बहन शान्ति को देते हैं। नरेश मेहता को रचनाकारों की पंक्ति में विशिष्ट स्थान दिलाने का बहुत बड़ा श्रेय पत्नी महिमा जी को जाता है। महिमा जी पति नरेश जी के सर्जनापथ को प्रशस्त करने के लिए कुछ भी करने को तैयार थीं। महिमा जी का सम्बल नरेश जी के लिए सबसे बड़ा सम्बल था।

नरसिंहगढ़ के निवास काल में नरेश जी ने स्कूल पढ़ाई के अतिरिक्त भी बहुत कुछ पढ़ा। "हाई स्कूल के पहले ही उन्होंने 'चन्द्रांता', 'राबिन्सन् क्रूसो', 'युद्ध और शान्ति' तथा 'दो नगरों की कहानियाँ', 'कालिदास', 'सूर' और 'तुलसी' तथा 'महाभारत', 'पुराण' और धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन और श्रवण भी किशोरावस्था में ही किया था। वस्तुतः इससे उनकी रुचि एक ओर परिमार्जित होती गई और दूसरी ओर साहित्य के प्रति रचनात्मकता का भाव भी पैदा करती गयी।"4 उन्होंने विदेशी उपन्यास भी पढ़े। नरसिंहगढ़ के तालाब के किनारे बहुत से साहित्य को नरेश जी ने पढ़ा, खूब कविताएँ भी लिखी। नरसिंहगढ़ के परिवेश ने ही उन्हें सर्जक बनाया।

दिल्ली के निवास के समय कवि मेहता का संपर्क कुछ विशिष्ट साहित्यकारों से हुआ। संपर्क इनकी साहित्यिक दृष्टि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अंत में अपने साहित्यिक कृतित्व के लिए उपयुक्त न लगने के कारण इन्होंने दिल्ली छोड़कर, प्रयाग में स्थायी रूप से रहना स्वीकार कर लिया। अंततः इलाहाबाद में जाकर बसने का निर्णय नरेश जी के साहित्यिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय साबित हुआ। शब्द पुरुष अज्ञेय विचार संस्मरण' में नरेश जी ने स्वयं लिखा है – "कुछ दिनों बाद मेरा तबादला नागपुर हो गया। हालांकि लखनऊ से ही मैं जान चुका था कि रेडियो की यह सरकारी नौकरी बहुत नहीं चलेगी और मैं भी कोई बहुत उत्सुक नहीं था। इलाहाबाद के इन वर्षों ने एक प्रकार से मेरा भविष्य तय कर दिया था, कि मुझे सिर्फ लेखक ही बनना है और वह भी इलाहाबाद में रहकर और यह संकल्प अगत्या सन् 1959 में जाकर ही फलीभूत हुआ।"

नरेश जी काशी में ऋषिवत् आचार्य केशव प्रसाद मिश्र, पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र तथा आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के वैदिक ज्ञान को प्राप्त करते रहे। इस प्रकार वैष्णव संस्कार तथा शिवत्व एक दूसरे के अपूर्व सम्पर्क से सम्पर्कित हो एक खरे कंचन की तरह औपनिषदिक आशा से स्वरूपित हो उठे। इस तरह मालवा और काशी की सारी स्मृतियाँ नरेश जी की रचनाओं में स्पष्ट झलकती हैं। "नरेश के रहन–सहन, वेशभूषा और काव्य–रचना पर सुरुचिपूर्ण आभिजात्य की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है। वे मालवा के निवासी और काशी के अन्तर्वासी रहे हैं। उनकी रचनाओं में दोनों स्थानों की हल्की अनुगुंज सुनाई पड़ती है।"

प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा और कवि नरेन्द्र शर्मा का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। काशी जाने पर नरेश जी का काव्य–व्यक्तित्व सामने आया साथ ही गद्य लेखन भी विकसित होता रहा। प्रथम उपन्यास 'ट्रेन्चिज के पीछे' लिखा, उपन्यास में व्यक्त उग्र विचारधारा तथा राजनीतिक टिप्पणियों के कारण उस उपन्यास को तात्कालिन अधिकारियों द्वारा जब्त कर लिया गया। नरेश जी ने बंगला साहित्य का भी अध्ययन किया वस्तुतः इन्हें उपन्यास लिखने की प्रेरणा शरत्चन्द जी से ही मिली। नरेश मेहता प्रगतिशील प्रयोगनिष्ठ साहित्यकार है परन्तु वे एक सफल कवि के रूप में अधिक ख्यातिलब्ध रहे हैं – "नरेश मेहता ने भले ही साहित्य की विविध विधाओं के सृजन क्षणों में तन्मयता का अनुभव किया हो, लेकिन उनकी वास्तविक सृजन भूमि गीत और कविता की रही।"

नरेश मेहता ने गद्य एवं पद्य की समस्त विधाओं में अपनी सर्जना की है, जो निम्नलिखित हैं –

काव्य संकलन

1. दूसरा सप्तक (1951)
2. बनपाखी सुनो (1957)

3. बोलने दो चीड़ों को (1961)
4. मेरा समर्पित एकांत (1963)
5. उत्सवा (1979)
6. तुम मेरा मौन हो (1982)
7. अरण्या
8. आखिर समुद्र से तात्पर्य
9. पिछले दिनों नंगे पैरो
10. देखना एक दिन
11. चौत्या

नरेश मेहता और दूसरा सप्तक के कवियों का तुलनात्मक अध्ययन

दूसरा सप्तक

दूसरा सप्तक सात कवियों का संकलन है जिसका संपादन अज्ञेय द्वारा 1949 में तथा प्रकाशन 1951 में भारतीय ज्ञानपीठ से हुआ, दूसरा सप्तक में भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय एवं धर्मवीर भारती की रचनाएँ संकलित हैं। ख्सूत्र रू–रघु धर्म के लिए नरेश भवानी सिंह ने शकुन्तला को हर लिया,दूसरा सप्तक के कवियों ने समसामयिक काव्य की प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व किया और उनका प्रभाव अपने समय के काव्य पर पड़ा। आज भी अनेक काव्यप्रेमियों में इस संग्रह की कविताएँ आधुनिक हिन्दी कविता के उस रचनाशील दौर की स्मृतियाँ जगाएँगी जब भाषा और अनुभव दोनों में नये प्रयोग एक साथ कर सकना ही कवि–कर्म को सार्थक बनाता था। निस्संदेह ये कविताएँ अपने में तृप्तिकर हैं– उनके लिए जिन्हें अब भी कविता पढ़ने का समय है। साथ ही, इस संग्रह की विचारोत्तेजक और विवादास्पद भूमिका को पढ़ना भी अपने में एक ताजा बौद्धिक अनुभव आज भी है।

भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र (जन्मरू २६ मार्च १९१३ – मृत्युरू २० फरवरी १९८५) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि तथा गांधीवादी विचारक थे। वह श्दूसरा सप्तकश के प्रथम कवि हैं। गांधी–दर्शन का प्रभाव तथा उसकी झलक उनकी कविताओं में साफ देखी जा सकती है। उनका प्रथम संग्रह श्गीत–फरोशश अपनी नई शैली, नई उद्भावनाओं और नये पाठ–प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ। प्यार से लोग उन्हें भवानी भाई कहकर सम्बोधित किया करते थे।

उन्होंने स्वयं को कभी भी निराशा के गर्त में डूबने नहीं दिया। जैसे सात–सात बार मौत से वे लड़े वैसे ही आजादी के पहले गुलामी से लड़े और आजादी के बाद तानाशाही से भी लड़े। आपातकाल के दौरान नियम पूर्वक सुबह–दोपहर–शाम तीनों वेलाओं में उन्होंने कवितायें लिखी थीं जो बाद में त्रिकाल सन्ध्या नामक पुस्तक में प्रकाशित भी हुईं।ख्1,

भवानी जी को १९७२ में उनकी कृति बुनी हुई रस्सी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। १९८१–८२ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का साहित्यकार सम्मान दिया गया तथा १९८३ में उन्हें मध्य प्रदेश शासन के शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया।

प्रमुख कृतियाँ

कविता संग्रह– गीत फरोश, चकित है दुख, गान्धी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, त्रिकाल सन्ध्या, व्यक्तिगत, परिवर्तन जिए, तुम आते हो, इदम् न मम, शरीर कवितारू फसलें और फूल, मानसरोवर दिन, सम्प्रति, अँधेरी कविताएँ, तूस की आग, कालजयी, अनाम, नीली रेखा तक और सन्नाटा।

बाल कविताएँ – तुकों के खेल,

संस्मरण – जिन्होंने मुझे रचा

निबन्ध संग्रह – कुछ नीति कुछ राजनीति।

शैली

भवानी प्रसाद मिश्र उन गिने चुने कवियों में थे जो कविता को ही अपना धर्म मानते थे और आम जनों की बात उनकी भाषा में ही रखते थे। उन्होंने ताल ठोंककर कवियों को नसीहत दी थी–

जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख,

और इसके बाद भी हम से बड़ा तू दिख,

उनकी बहुत सारी कविताओं को पढ़ते हुए महसूस होता है कि कवि आपसे बोल रहा है, बतिया रहा है। जहाँ अपनी श्गीतफरोशश कविता में कवि ने अपने फिल्मी दुनिया में बिताये समय को याद कर कवि के गीतों का विक्रेता बन जाने की विडम्बना को मार्मिकता के साथ कविता में ढाला है वहीं श्सतपुड़ा के जंगलश जैसी कविता सुधी पाठकों को एक अछूती प्रकृति की सुन्दर दुनिया में लेकर चलती है।.उनकी कविताएँ गेय हैं और पाठकों को ताउम्र स्मरण रहती हैं।

वे गूढ़ बातों को भी बहुत ही आसानी और सरलता के साथ अपनी कविताओं में रखते थे। नई कविताओं में उनका काफी योगदान है। उनका सादगी भरा शिल्प अब भी नये कवियों के लिए चुनौती और प्रेरणास्रोत है। वे जनता की बात को जनभाषा में ही रखते थे। उनकी कविताओं में नये भारत का स्वप्न झलकता है। उनकी कविताएँ परिवर्तन और सुधार की अभिव्यक्ति हैं। वे आपातकाल में विरोध में खड़े हो गए और विरोध स्वरूप प्रतिदिन तीन कवितायें लिखते थे। वस्तुतरू वे कवियों के कवि थे।

हरिनारायण व्यास

कृतियाँ

कविता संग्रह दूसरा सप्तक (छह अन्य कवियों के साथ), मृग और तृष्णा, त्रिकोण पर सूर्योदय, बरगद के चिकने पत्ते, आउटर पर रुकी ट्रेन, निद्रा के अनन्त में जागते हुए

शमशेर बहादुर सिंह

शमशेर बहादुर सिंह १३ जनवरी १९११ – १२ मई १९९३ सम्पूर्ण आधुनिक हिन्दी कविता में एक अति विशिष्ट कवि के रूप में मान्य हैं। हिन्दी कविता में निरन्तर प्रयोगशील रहने वाले, बिम्ब को काव्य–भाषा के रूप में प्रयुक्त करने वाले, प्रेम और सौन्दर्य के कवि तथा अनूठे माँसल ऐन्द्रिय बिम्बों के रचयिता होने पर भी शमशेर आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा से जुड़े रहे। दूसरा सप्तक से शुरुआत कर श्चुका भी हूँ नहीं मैंश के लिए साहित्य अकादमी सम्मान पाने वाले शमशेर

ने कविता के अलावा निबन्ध, कहानी एवं डायरी विधा में भी लिखा तथा अनुवाद–कार्य के अतिरिक्त हिन्दी–उर्दू शब्दकोश का संपादन भी किया।

साहित्यिक वैशिष्ट्य

शमशेर सौन्दर्य के अनूठे चित्रों के स्रष्टा के रूप में हिंदी में प्रायः सर्वमान्य हैं।ख्26, आरंभ में उन्होंने टेकनीक में एजरा पाउण्ड को अपना सबसे बड़ा आदर्श बताया था। बाद में निराला तथा पाउण्ड के अतिरिक्त वर्ले, लारेन्स, इलियट तथा अन्य कई कवियों की शैली का भी प्रभाव उन्होंने स्वीकार किया है।ख्12, ये कवि भिन्न विचारधारा के थे। अतः इलियट और एजरा पाउण्ड के शिल्प और कुछ हद तक भाव सौंदर्य के प्रति आकृष्ट होने के बावजूद विचारधारा में शमशेर उनसे दूर रहते थे।,

वस्तुतः शमशेर की कविता सीधी विचारधारा की कविता नहीं है। डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में ष्जीवन के कटुतम संघर्षों को लेकर उन्हें कविता में एकदम तरल बना सकना शमशेरबहादुर सिंह के काव्य व्यक्तित्व की पहिचान है। और इस रचना–क्षमता का बराबर अप्रदर्शन कवि का चरित्र, जहाँ प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता के तत्त्व एक दूसरे में घुलमिल जाते हैं। ...चित्रकला संगीत और कविता मिलकर उनके यहाँ रचना संभव करते हैं। भाषा में बोलचाल के गद्य का लहजा, और लय में संगीत का चरम अमूर्तन इन दो परस्पर प्रतिरोधी मनःस्थितियों को उनकी कला साधती है। यही कारण है कि जागतिक संदर्भों के कम–से–कम रहने पर भी शमशेर में हमें एक संपूर्ण रचना–संसार दिखाई देता है।ष्ख्28, शमशेर की कविताएँ साधारणतया कठिन एवं दुरूह मानी जाती रही है। वस्तुतः जो पाठक वर्ग परंपरागत रूप से काव्यानुभूति को पहले अर्थ की दृष्टि से ग्रहण करके तभी सौन्दर्य–भावना तक पहुँचते हैं, उनके लिए शमशेर के विशिष्ट शिल्प से कोई परिपूर्ण अर्थ प्राप्त करना दूभर हो जाता है। इसकी अपेक्षा उनकी कविता उस पाठक वर्ग के लिए अधिक उपयुक्त है जो रागबोध की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक विकसित है।

उसके सामने अभिव्यक्ति का वाह्य पक्ष —— शिल्प, अर्थ आदि गौण रहता है और वह सीधे कविता में निहित सौन्दर्यानुभूति का सहभोग कर लेता है।ख्29, स्वयं नामवर सिंह ने स्वीकार किया है कि शमशेर की कविताओं में विचारों का निषेध है। नामवर सिंह के शब्दों में ष्सम्भवतः वे इस आदर्श को मानते हैं कि कविता को कभी मत प्रकट नहीं करना चाहिए।.. विचारों का निषेध और भावनाओं का अनुशासन करने के बाद इन्द्रिय–बोध ही बचते हैंय जहाँ तक यथातथता का निर्वाह सम्भव है और शमशेर की कवित्व–शक्ति के प्रसार का यही प्रकृत क्षेत्र है।.. विविध इन्द्रिय–बोध सूचक चित्रों की संवेदनशीलता में शमशेर बेजोड़ हैं..। शमशेर की इस सफलता के साधन हैं बिम्ब। वे बिम्बों के सिवा किसी दूसरे माध्यम से बात ही नहीं करते।, वस्तुतः शमशेर श्बात बोलेगी, हम नहींश के इतने कायल हैं कि उनकी सम्पूर्ण काव्य–अभिव्यक्ति प्रायः बिम्बों में ही होती है। वे अपनी अभिव्यक्ति–शैली के ऐसे स्थल पर खड़े हैं, जहाँ से वे नीचे उतरना नहीं चाहते, बल्कि वे अपने साथ ही अपने संवेदनशील पाठक को ऊँचा उठाकर एक अमूर्त, पारदर्शी, वर्णमय लोक में ले जाना चाहते हैं। यह लोक वर्तमान युग सत्य के तमाम हल्के–गहरे शेड्स के साथ कवि के श्मूडश का लोक है।ख्31, इसलिए भी मलयज का मानना है कि

ष्शमशेर श्मूड्सश के कवि हैं किसी श्विजनश के नहीं। यह अवश्य है कि उनका श्मूडश उस व्यक्ति का श्मूडश है, जो हमारे–आपके समाज में उसकी सम्पूर्ण विसंगतियों, विडम्बनाओं, यानी एक शब्द में श्यथार्थश के बीच रहता है, उन्हें भोगता है और उन्हें जीता है।,

और डॉ० नामवर सिंह का निष्कर्ष है कि ष्शमशेर के लिए इतना ही काफी है कि वे कवि हैं——सिर्फ कवि। न श्शुद्ध कविताश का कवि, न श्कवियों का कविश, न प्रयोग का कवि और न प्रगति का ही कवि! कुछ कवि ऐसे होते हैं जिन्हें हर विशेषण छोटा कर देता है।ष्ख्18,ख्33, और शमशेर को तो डॉ० रामविलास शर्मा भी सारे विचारधारात्मक आत्म–संघर्ष और द्वंद्वात्मकता के बावजूद सिद्ध कवि मानते हैं,

उपसंहार

हिन्दी साहित्य जगत् में प्रतिष्ठित कथाकार, कवि और विचारक श्रीनरेश मेहता का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। इन्होंने हिन्दी उपन्यास साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। किसी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के लिए उसके व्यक्तित्व एवं परिवेश का जानना जरूरी होता है। क्योंकि साहित्य का उसके व्यक्तित्व से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। कोई भी मनुष्य पैदाइशी तौर पर पूर्ण नहीं होता। उसका कृतित्व काल और परिस्थिति के अनुसार गतिधारण करता है। विशिष्ट परिस्थितियों और वातावरण में उसकी बुद्धि, सामर्थ्य और कृतित्व को गति मिलती है और अपनी एक जीवन निष्ठा तैयार होती है। किसी व्यक्ति के कृतित्व का मूल्यांकन करते समय तत्कालीन परिस्थितियों और जीवन को देखना अत्यावश्यक है। लेकिन हम यह भी नहीं कह सकते कि मनुष्य मात्र परिस्थितियों के हाथों का खिलौना है। उसका जन्म, जीवन और अन्त चाहे परिस्थितियों के हाथों में है लेकिन उसकी मानसिकता और उसकी विचारधाराएँ परिस्थितियों के अनुरूप होते हुए भी अलग और मौलिक है। नरेश मेहता उन्हीं व्यक्तियों में से एक है जो युगानुरूप होते हुए भी निराले और निराले होते हुए भी युगानुरूप है। नरेश मेहता की पात्र–योजना एकदम सधी हुई है। किसी भी उपन्यास का कोई पात्र अनावश्यक नजर नहीं लगता। इन्होंने अपनी कथा के माध्यम से इनको इस प्रकार चित्रित किया है कि वो पाठक के सामने एकदम सजीव हो उठते है। ऐसा महसूस होता है कि हम दिनचर्या में उन्हीं पात्रों के साथ उठते–बैठते है। ३प्रथम फाल्गुन३ उपन्यास में एक दर्पयुक्त व्यक्ति का, उसकी इच्छाओं का अन्त क्या होता है, यही दिखाया गया। उन्होंने गोपा के माध्यम से बताया है कि अगर व्यक्ति संकुचित होकर रहता है तो वह अन्त में दुर्गन्ध से भर जाता है, अगर वह सभी के सामने खुलकर आये तो प्रफुल्लित और सुगंधित होता है। गोपा का दर्प ही अन्त में इसे महिम से अलग कर देता है जबकि महिम उसे आखिर तक भी अपनाना चाहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

[1] मेहता महिमा, उत्सव पुरुषरू श्री नरेश मेहता, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2003, पृ.सं. 36, पैरा. 4

[2] शर्मा विष्णु प्रभा, नरेश मेहता कृत – 'महाप्रस्थान', नयी दिल्ली, आशा प्रकाशन, 1985, पृ.सं. 107, पैरा. 3

[3] मिश्र सत्यप्रकाश, माध्यम, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जनवरी–मार्च 2001, पृ.सं. 44, पैरा. 3

[4] शर्मा राजकुमार, हिन्दी उपन्यास उद्‌भव एवं विकास, जयपुर, कालेज बुक डिपो (अप्राप्त संस्करण), पृ.सं. 1, पैरा. 2

[5] मेहता नरेश, शब्द पुरुष 'अज्ञेय', इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 1989, पृ.सं. 13, पैरा. 1

[6] सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, नयी दिल्ली, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2000, पृ.सं. 436, पैरा. 2

[7] शर्मा कुमुद, हिन्दी के निर्माता, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2006, पृ.सं. 382, पैरा. 3

[8] मेहता महिमा, उत्सव पुरुषरू श्री नरेश मेहता, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2003

[9] http://sahitya&akademi-gov-in/awards/akademi%20samman_suchi-jsp#KASHMIRI; प्राप्त करने की तिथिरू 7 मार्च 2019.

[10] प्रतिनिधि कविताएँ, शमशेर बहादुर सिंह, संपादक– नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला पेपरबैक संस्करण–१९९०, पृष्ठ–१.

[11] शमशेर बहादुर सिंह रचनावली, खंड–1, संपादक–रंजना अरगड़े, शिल्पायन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ–21.

[12] शमशेर बहादुर सिंह रचनावली, खंड–3, संपादक–रंजना अरगड़े, शिल्पायन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ–445 एवं 449.

[13] आजकल (पत्रिका), जनवरी २०११, प्रथम आवरण पृष्ठ पर श्कवि परिचय रू एक दृष्टिश में उल्लिखित।

[14] गोदारण, अंक–१०, स्मरण में है जीवन रू शमशेर बहादुर सिंह, प्रधान संपादक– भरत सिंह, संपादक–आलोक सिंह, पृष्ठ–२८.(पुस्तक रूप में श्यश पब्लिकेशंस, नवीन शाहदरा, दिल्ली से प्रकाशित।)